विद्या वनम आदिवासी बच्चों का एक नवाचारी स्कूल : एक आकलन

fefyUn ckã vk¡j ,e- l¡j'k ckc





विद्या वनम आदिवासी और सुविधाहीन बच्चों का स्कूल है जो तमिलनाडु और केरल की सीमा के किनारे कोयम्बटूर जिले के अनाईकट्टी गाँव में स्थित है। 2007 में शुरू हुआ यह स्कूल इस इलाके के बच्चों के लिए अँग्रेजी माध्यम का कम लागत में बना पहला स्कूल है। पिछले 5 सालों में यह स्कूल संघटनात्मक रूप से एक ऐसी संस्था में बदल गया है जो एक प्राइवेट स्कूल से कहीं ज्यादा है और जो अनाईकट्टी और आसपास के गाँवों के बच्चों को उच्च स्तर की अँग्रेजी शिक्षा प्रदान कर रहा है।

विद्या वनम की जो बात हमें सबसे खास लगती है वह है स्कूल की "नीचे से ऊपर (बॉटम-अप)" वाली पद्धति और इसे अपनी पहुँच के समुदायों के वृहत पारिस्थितिक तंत्र के साथ जोड़ने के प्रयत्न के पीछे की सोच। इसमें सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था, खासतौर पर सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.) की "ऊपर से नीचे (टॉप-डाउन)" वाली पद्धति से समानताएँ और साथ ही रोचक व शिक्षाप्रद अन्तर दिखाई देते हैं।

जहाँ तक विद्या वनम को देखने के हमारे दृष्टिकोण की बात थी तो एक वृहत सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था के साथ उसकी ये समानताएँ और अन्तर बहुत महत्त्वपूर्ण संकेतक बन गए।



आकलन का तरीका निकालना

विद्या वनम ऐसी एक और सामान्य संस्था प्रतीत नहीं हुई जहाँ कि इलाके के बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं। बल्कि एक ऐसा "बिन्दु" जहाँ समुदाय के सदस्य, खासतौर पर महिलाएँ, "ज्ञान के आधार" और "व्यावसायिक समर्थन मंच" के रूप में साथ आकर उसके कामों में उत्पादक ढंग से भाग लेते हैं। यह स्कूल अपनी पहुँच के समुदायों के साथ एक सहजीवी रिश्ते के माध्यम से उसके पारिस्थितिक तंत्र में बहुत अच्छे ढंग से जुड़ता हुआ प्रतीत होता है।

इसलिए हमने विद्या वनम जैसे स्कूल के विचार की पृष्ठभूमि और उत्पत्ति की पड़ताल के साथ आकलन की अपनी प्रक्रिया को प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। स्कूल की निदेशक सुश्री प्रेमा रंगाचारी और बच्चों के माता-पिता के साथ विस्तृत बातचीत की गई। इस बातचीत से यह उजागर हुआ कि 2000-2001 में, इस इलाके के करीब 40 गाँवों के स्थानीय लोगों - आदिवासी और गैर-आदिवासी, दोनों - ने सुश्री रंगाचारी के समक्ष एक साझी इच्छा रखी। वे अपने बच्चों के लिए ऐसा अच्छा अंग्रेजी माध्यम का स्कूल चाहते थे जिसका खर्चा वे अपनी रोजाना की मजदूरी और छोटे-मोटे व्यवसायों से होने वाली आमदनियों के सहारे उठा सकें। सुश्री रंगाचारी उस वक्त अनाईकट्टी जैसे सुदूर इलाकों में बालवाड़ी शिक्षकों के साथ कार्यशालाएँ संचालित कर रही थीं। जब स्कूल की योजना को अन्तिम रूप दिया गया, तो विद्या वनम (भुवन फाउण्डेशन) ने निशुल्क शिक्षा प्रदान करने के विरुद्ध निर्णय लिया। बुनियादी रूप से इसलिए कि जिनकी इच्छाओं के फलस्वरूप स्कूल

खुल रहा था, उनसे भी शुल्क लेने से उन्हें यह एहसास होगा कि अपने बच्चों के स्कूल और शिक्षा में उनका भी अधिकार है और वे स्वामित्व भी महसूस कर सकेंगे।

हमें यह बात साफ हो गई कि आकलन की हमारी पद्धति को भी पर्याप्त रूप से इस स्कूल के उद्भव के पीछे के समग्रतावादी सोच के अनुरूप होना पड़ेगा।

जहाँ अनुभव करना और स्कूल के आधारभूत ढाँचे, शिक्षण और पोषण कार्यक्रम जैसे मानदण्डों के बारे में अपने अवलोकनों को दर्ज करना जरूरी होगा, वहीं हमें एहसास हुआ कि हमें मानव जाति-विज्ञान सम्बन्धी व्याख्या की भी जरूरत पड़ेगी। ताकि हम इन समुदायों को महसूस होने वाले स्वामित्व की सार्थक ढंग से पड़ताल कर सकें और इस बात को समझ सकें कि स्कूल और उसके समग्र पारिस्थितिक तंत्र के बीच कैसे और किस प्रकार के पारस्परिक लाभकारी रिश्ते उभरे हैं। हमें ऐसे भागीदार पर्यवेक्षकों की भी जरूरत होगी जिनकी कम से कम 3 भाषाओं, तमिल, मलयालम और अँग्रेजी में संवाद करने की बहुत अच्छी योग्यता हो। ये अगर महिलाएँ हों तो ज्यादा अच्छा होगा क्योंकि स्थानीय समुदायों की महिलाएँ विद्या वनम और उसके इर्द-गिर्द होने वाली गतिविधियों की प्रमुख भागीदार और संचालक होती हैं।

पारिस्थितिक तंत्र का अध्ययन

सामुदायिक भागीदारी, एक संस्था के रूप में विद्या वनम की सफलता में एक महत्त्वपूर्ण कारक है। इसे बिलकुल शुरुआत से ही स्कूल की कार्यप्रणाली का अभिन्न हिस्सा बना दिया गया था। स्थानीय लोगों ने 2007[1] में स्कूल के शुरू होने के वक्त सर्वसम्मति से इस बारे में निर्णय लिया कि वे कितना शुल्क देंगे। ऐसे मामलों में जहाँ कोई माता-पिता आर्थिक मुसीबतों का सामना कर रहे हों, स्कूल, अपने कर्मचारियों के माध्यम से लगातार उस परिवार के सम्पर्क में रहता है और कई बार तो उनके लिए परामर्शदाता की भूमिका भी निभाता है। कभी-कभी ऐसे माता-पिता को स्कूल में ही काम मिल जाता है और इससे उनकी जिन्दगी पूरी तरह से बदल जाती है। जैसा कि अरासी के मामले में हुआ। अरासी कोन्डानुर पुडुर में रहने वाली अकेली रहने वाली आदिवासी महिला है जो 3 बच्चों की माँ है। आज अरासी कहती है कि उसके लिए स्कूल बस एक ऐसी संस्था नहीं है जहाँ उसके बच्चे शिक्षा हासिल करते हैं बल्कि उससे कहीं ज्यादा बढ़कर है। उसे लगता है कि स्कूल ने उसे अकेले रहने की ताकत दी है और उसे[2] सशक्त बनाया है।

अरासी जैसे माता-पिताओं की बीती जिन्दगियों की पड़ताल करना स्कूल और समुदाय के बीच के रिश्ते को समझने का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण बन गया।

विद्या वनम में कई माता-पिता या तो शिक्षकों के रूप में या फिर गैर-शिक्षक कर्मचारियों के रूप में कार्यरत हैं। कई, स्थानीय महिलाओं के द्वारा स्थापित स्व-सहायता समूह की अन्य गतिविधियों में संलग्न रहते हैं, जैसे कि कागज की थैलियाँ, बेंत की डलिया, सजावटी चटाइयाँ आदि बनाना। इरूला जनजाति के सदस्यों को वन उपज पर अधिकार प्राप्त है। स्कूल इस काम में सहायक बन जाता है और जो भी चीजें ये लोग इकट्ठा करते हैं - शहद को छानना और बोतलों में भरना, औषधीय शैम्पू बनाना और बेचना तथा स्थानीय वन उपजों जैसे आँवला, अरप्पु आदि से बने सौंदर्य प्रसाधन - उन्हें पैकेजबन्द करने और बेचने में प्रोत्साहन देने तथा मदद करने का काम करता है।

स्थानीय लोगों के साथ साक्षात्कारों, सहभागी अवलोकनों और विषय-केन्द्रित समूह चर्चाओं के माध्यम से हमने जाना कि किस प्रकार समुदाय के सदस्यों के बीच स्कूल की गतिविधियों और प्रबन्धन को लेकर स्वामित्व और सहभागिता का भाव संगठित रूप से विकसित हुआ। इसमें एस.एस.ए. जैसे उन अभियानों से यह एक शिक्षाप्रद अन्तर है, जो सामुदायिक भागीदारी के महत्त्व को स्वीकार तो करते हैं पर उसे समाविष्ट करने का कार्य और उसके विषय-क्षेत्र को परिभाषित करने का कार्य केन्द्रीकृत ढंग से करते हैं।

अन्य मानदण्डों का आकलन आधारभूत ढाँचा

सरल अनुभवजन्य अवलोकन और तस्वीरें उपलब्ध आधारभूत ढाँचे को दर्ज करने की बुनियादी तकनीकें थीं।



स्कूल में इस तरह की नीची मेजें, चौकियाँ, चटाइयाँ और नीचे आले उपलब्ध हैं, जिन तक बच्चों की पहुँच हो और जिनका उपयोग करने में उन्हें किसी और की मदद न लेना पड़े ताकि स्वतंत्र रूप से सीखने को प्रोत्साहन मिले। जब हम ऊपर की ओर जाते हैं, तो पाते हैं कि ऊँची कक्षाओं में फर्नीचर अधिक पारम्परिक हो जाता है। यहाँ एक रोचक और नूतन बात है और वह यह कि अलग-अलग कक्षाओं को विषयों के मुताबिक "क्षेत्रों (जोन)" के रूप में पृथक किया गया है। तो बजाय इसके कि बच्चे पूरे समय एक ही कमरे में बैठे रहें और अलग-अलग शिक्षक और "विषय" उन तक आते जाएँ, वे क्या सीख रहे हैं उसके हिसाब से वे खुद एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाते हैं। ये कुछ सरल नवीनताएँ हैं जो मिश्रित उम्र समूह के सीखने के परिदृश्य में कारगर हो सकती हैं और हमें रिकार्ड करने तथा खास तौर पर गौर करने लायक लगीं।

पोषक कार्यक्रम

बच्चों और स्कूल के स्टाफ को दिन में 3 बार पोषक और स्वादिष्ट भोजन प्रदान किया जाता है। यह निश्चित ही विद्या वनम स्कूल की अच्छी प्रक्रियाओं की सबसे उत्तम बातों में से एक है।

यह सर्वविदित है कि तमिलनाडु बच्चों को ताजा भोजन देने में अगुआ राज्य रहा है और अब ऐसा खाना भारत भर के सरकारी स्कूलों में बच्चों को दिया जाता है। विद्या वनम में दिन के खाने के अलावा 2 बार पोषक अल्पाहार/नाश्ता भी प्रदान किया जाता है। लोग पोषण और स्थानीय रूप से उपलब्ध स्रोतों के बारे में जो जानते हैं, उसका उपयोग व्यंजन-सूची को बढ़ाने के लिए करते हैं। इससे स्थानीय ज्ञान उपेक्षित और











अस्वीकृत होने तथा स्थानीय समुदाय अलग-थलग कर दिए जाने से बच जाते हैं।

प्रशासन के साथ किए गए साक्षात्कारों से पता चला कि प्रति भोजन लागत सरकारी स्कूलों में भोजन पर होने वाले व्यय से बस थोड़ी सी ही ज्यादा है। विद्या वनम में समुदाय में उसके निकट होने का लाभ उठाकर स्थानीय लोगों के सहयोग से स्थानीय तौर पर खाद्य सामग्री को जुटाया जाता है और संसाधित किया जाता है। साथ ही उसके उचित संग्रहण को एवं कम से कम क्षति को सुनिश्चित किया जाता है।

सीखने की प्रक्रिया

हमें सीखने-सिखाने की उस प्रक्रिया को समझने के लिए, जो शिक्षण की एक अति महत्त्वपूर्ण मानी जाने वाली जड़ अवधारणा द्वारा संकुचित नहीं हुई है, लगातार किए जाने वाले सहभागी अवलोकन की जरूरत थी। दो ऐसे जमीनी स्वयंसेवकों के द्वारा, जो एक पूरे हफ्ते तक विद्या वनम के जीवन का हिस्सा बन गए थे और इस लेख के लेखकों के 3 दिवसीय भ्रमण के द्वारा हमें वे अवलोकन मिल गए जो स्कूल के आकलन के लिए जरूरी थे।

यह स्कूल मोटे तौर पर मॉन्टेसरी और रचनावादी सिद्धान्तों पर आधारित है। यह बच्चों तथा शिक्षकों की स्वायत्तता का, तत्क्षण अपने दिमाग से सोचकर करने और नई चीजें करने का पर्याप्त मौका देता है। पूरे परिवेश में शिक्षकों और बच्चों के बीच बहुत सहज संवाद होता है। बच्चे निडर हैं। उन्हें प्रश्न पूछने और असंतोष जताने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षकों को भी बच्चों को आदर के साथ और पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सुनने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। बच्चों को स्थानीय इतिहास को दर्ज करने के लिए प्रेरित करना, विज्ञान के विषयों में थीम-आधारित ढंग से सीखना शुरू करना (उदाहरण के लिए : पौधों के बारे में किताब से नहीं बल्कि प्रकृति भ्रमणों, अवलोकन करने, महसूस करने और विभिन्न प्रकार की पत्तियों, घास, बीजों, फूलों आदि को एकत्रित करके सीखना)। ये वे नवीन ढंग हैं जो बच्चों का आधुनिक स्थानीय वैज्ञानिक सोच से परिचय कराने के साथ ही ज्ञान और ज्ञान प्रणालियों की वैधता और मान्यता को बचाए रखने पर विद्या वनम द्वारा दिए जाने वाले समग्र महत्त्व के अनुरूप हैं।



चिन्तन

आदिवासी और सुविधाहीन बच्चों के स्कूल के रूप में विद्या वनम का आकलन करने की पूरी प्रक्रिया पर विचार करते हुए, हम देखते हैं कि जानकारियों को स्मृति में रखने और दोहराने की क्षमताओं के सम्बन्ध में बच्चों की वैयक्तिक उपलब्धि के स्तरों के बारे में आँकड़े एकत्रित करने के लिए परिमाणात्मक तरीकों के इस्तेमाल पर हमारा ध्यान उतना ज्यादा नहीं था। हमने स्कूल में अन्तर्निहित समग्रतावादी दृष्टिकोण को तथा इस संस्था को चलाने वाली प्रक्रियाओं और लोगों को समझने की कोशिश की। इसके लिए मानव जाति-विज्ञान से जुड़ी गुणात्मक पद्धति की जरूरत थी।

हमारे लिए इन प्रक्रियाओं के पीछे के महत्त्वपूर्ण कारकों को पकड़ पाना जरूरी था ताकि यह देखा जा सके कि क्या वे सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था जैसे बड़े ढाँचों में दोहराए जा सकते हैं। खासतौर से तमिलनाडु में जहाँ

बहुत अच्छे नूतन प्रयास किए गए हैं जैसे गतिविधि आधारित शिक्षण (ए.बी.एल.) और सक्रिय शिक्षण पद्धति (ए.एल.एम.), पर अब वह राज्य इन अच्छे प्रयासों को जारी रखने के मुद्दे से जूझ रहा है।

हमें यह समझ में आता है कि अपने पारिस्थितिक तंत्र में एक अभिन्न हिस्से के रूप एकीकृत होना, नीचे से ऊपर वाली पद्धति और एक लचीली शिक्षण प्रक्रिया - ये वे महत्त्वपूर्ण कारक हैं जो विद्या वनम को सफल बनाते हैं। ये वृहत सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्थाओं के लिए नीति स्तर पर कुछ संकेतक प्रदान करने का काम कर सकते हैं।

1. स्कूल के शुल्क को प्रति माह मोटे रूप से माता–पिता की एक दिन की आमदनी के बराबर रखने का निर्णय लिया गया था। छोटे भाई–बहनों को इसका आधा शुल्क ही देना पड़ता है। लेकिन इस बात पर गौर करना पड़ेगा कि आदिवासी लोगों के बीच गरीबी का स्तर ऐसा है कि कई परिवार इस 'यथोचित' व्यवस्था का खर्चा तक नहीं उठा पाते। क्या स्कूल का और विस्तार करना है तथा और अधिक समावेशी बनना है और अगर हाँ तो कैसे, ये सब वे चुनौतियाँ हैं जो स्कूल के सामने आनी ही हैं तथा स्कूल के प्रशासक इससे अवगत हैं।

2. अरासी (परिवर्तित नाम) कक्षा 8 तक पढ़ी थी और वह स्थानीय तौर पर आयोजित की जाने वाली अतिरिक्त संध्याकालीन कक्षाओं में बच्चों को पढ़ा रही है। एक हादसे में उसके पति की मृत्यु हो जाने के बाद, वह इस स्कूल में आ गई जहाँ उसके 2 छोटे बच्चे पढ़ रहे हैं। उसे अन्य शिक्षकों की सहायता करने के लिए रख लिया गया था और अब उसे काम करते हुए शिक्षक–प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

(लेखकगण, प्रोफेसर वी. आर. मुरलीधरन, गीता जयराज, कावेरी मूर्ति तथा दल के उन दूसरे सदस्यों को जिन्होंने आकलन किया धन्यवाद देते हैं। मूल रिपोर्ट का सार प्रस्तुत करने और इस पाण्डुलिपि को तैयार करने में मदद करने के लिए टी. तमिलकानी और के. जयश्री को भी धन्यवाद देते हैं।)

मिलिन्द *ने सैण्टर फॉर जर्मन स्टडीज, जे.एन.यू. से जर्मन में पी.एचडी. की है। वे आई.आई.टी, मद्रास के मानविकी व सामाजिक विज्ञान विभाग में जर्मन भाषा तथा साहित्य, साहित्यिक सिद्धान्त और समालोचना के कोर्स पढ़ाते हैं।*

सुरेश *ने त्रिवेन्द्रम के सैण्टर फॉर डैवेलपमेंट स्टडीज से पी.एचडी. की है। वर्तमान में वे आई.आई.टी, के मानविकी व सामाजिक विज्ञान विभाग में अर्थशास्त्र पढ़ाते हैं। वे भारतीय अर्थव्यवस्था से जुड़े मुद्दों, मुख्यतः औद्योगिक क्षेत्र तथा विकास नीति पर काम करते हैं।* ***अनुवाद*** *: भरत त्रिपाठी*